भारतीय विद्यालय अल वादी अल कबीर(2020-21)

कक्षा-दसवीं (२०२०-२०२१)	**विभाग: हिंदी**	**Date – 21-06-2020**
कार्य-पत्रिका संख्या: 8	**विषय: अर्थग्रहण (गद्यांश)**	**Note: Pl. file in portfolio**

नाम: ________________________अनुभाग: _____अनुक्रमांक: _____दिनांक: __________

I. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्पों में से चुनिए:

घड़ी की टिक्-टिक् हमसे कुछ कहती है। उसकी निरंतर सरकती हुई सुइयाँ कह रही हैं, "समय चला जा रहा है, कुछ कर लो, कुछ कर लो। जो क्षण एक बार चला गया, वह कभी लौटकर नहीं आता।"

एक बार एक व्यक्ति ने महात्मा गांधी से पूछा, "जीवन में ऊँचा उठने के लिए किसी को सबसे पहले क्या करना चाहिए – शिक्षा, शक्ति या धन-संग्रह?"

गांधी जी ने उत्तर दिया, "ये वस्तुएँ जीवन में उठने में सहायक अवश्य होती हैं, किंतु मेरे विचार से एक वस्तु का महत्त्व सबसे अधिक है, और वह है – समय की परख। प्रत्येक कार्य का निर्धारित समय होता है, उसे करने या न करने का। यदि आपने समय को परखने की कला सीख ली है, तो पुनः आपको किसी प्रसन्नता या सफलता की खोज में दर-दर भटकने की आवश्यकता नहीं, वह स्वयं आकर आपका द्वार खटखटाएगी।"

हमें समय का मूल्य समझना चाहिए। साथ ही, समय के अनुसार काम करना चाहिए। जीवन की यही कुंजी है। जो लोग निरंतर असफल होते हैं, वे प्रायः प्रतिकूल परिस्थितियों को बुरा-भला कहने लगते हैं। वस्तुतः बड़ी असफलता का कारण दुर्भाग्य नहीं होता, अपितु समय को ग़लत समझने की भूल होती है। यूनान के सबसे बड़े दार्शनिक अरस्तू ने इसे और भी अधिक स्पष्ट करते हुए कहा है, "प्रत्येक व्यक्ति को उचित समय पर, उचित व्यक्ति से, उचित मात्रा में, उचित उद्देश्य के लिए, उचित ढंग से व्यवहार करना चाहिए।"

वस्तुतः एक-एक क्षण से प्रत्येक व्यक्ति का संबंध रहता है, किंतु व्यक्ति उसके महत्त्व को नहीं समझता। अधिकतर व्यक्ति सोचते हैं कि कोई अच्छा समय आएगा, तो काम करेंगे। इसी उधेड़बुन में वे जीवन के अमूल्य क्षणों को खो देते हैं। वे दिनों, मासों और वर्षों को किसी शुभ क्षण की प्रतीक्षा में बिता देते हैं, किंतु ऐसा क्षण किसी के जीवन में कभी नहीं आता, जब बिना हाथ-पाँव हिलाए संसार की बहुत बड़ी संपत्ति छप्पर फाड़कर उसके हाथ लग जाए। वास्तव में, पुरुष जिस समय को चाहे, शुभ क्षण बना सकता है। आवश्यकता है श्रम की और समय की परख की।

1. हर काम समय से क्यों करना चाहिए?

(क) दूसरे आप से आगे निकल जाएँगे
(ख) एक बार बीता समय कभी लौटकर नहीं आता
(ग) काम अधूरा रह जाएगा
(घ) भविष्य के लिए धन-संग्रह नहीं कर पाएँगे

2. गांधी जी के अनुसार जीवन में ऊँचा उठने के लिए सबसे पहले किस चीज़ की आवश्यकता है?

(क) समय की परख की
(ख) धन-संग्रह की
(ग) शिक्षा-प्राप्ति की
(घ) आत्म-सुरक्षा की

3. असफल मनुष्य किसे दोष देता है?

(क) अपने दुर्भाग्य को (ख) अनुकूल परिस्थितियों को

(ग) प्रतिकूल परिस्थितियों को (घ) अपनी निष्क्रियता को

4. अरस्तू कौन थे?

(क) एक शिक्षाविद् (ख) एक देशभक्त

(ग) एक नेता (घ) एक दार्शनिक

5. मनुष्य जीवन के अमूल्य क्षणों को कैसे खो देता है?

(क) अशुभ समय में काम करने के भय से (ख) शुभ क्षण की प्रतीक्षा में

(ग) अपने भीतर दिक्कत पैदा होने की प्रतीक्षा में (घ) श्रम करने की इच्छा उत्पन्न होने से

II. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्पों में से चुनिए:

विद्यार्थी जीवन ही वह समय है, जिसमें बच्चों के चरित्र, व्यवहार तथा आचरण को जैसा चाहे, वैसा रूप दिया जा सकता है। यह अवस्था भावी वृक्ष की उस कोमल शाखा की भाँति है, जिसे जिधर चाहे मोड़ा जा सकता है। पूर्णतः विकसित वृक्ष की शाखाओं को मोड़ना संभव नहीं। उन्हें मोड़ने का प्रयास करने पर वे टूट तो सकती हैं, पर मुड़ नहीं सकतीं। छात्रावस्था उस श्वेत चादर की तरह होती है, जिसमें जैसा प्रभाव डालना हो, डाला जा सकता है। सफ़ेद चादर पर एक बार जो रंग चढ़ गया, सो चढ़ गया; फिर से वह पूर्वावस्था को प्राप्त नहीं हो सकती। इसलिए प्राचीन काल से ही विद्यार्थी जीवन के महत्त्व को स्वीकार किया गया है। इसी अवस्था में सुसंस्कार और सद्वृत्तियाँ पोषित की जा सकती हैं। इसलिए प्राचीन समय में बालक को घर से दूर गुरुकुल में रहकर कठोर अनुशासन का पालन करना होता था।

1. व्यवहार को सुधारने का सर्वोत्तम समय कौन-सा है?

(क) प्राचीन काल (ख) पूर्वावस्था

(ग) छात्रावस्था (घ) विकसित अवस्था

2. छात्रावस्था की तुलना विकसित पेड़ से करना क्यों ठीक नहीं है?

(क) पेड़ की शाखा टूट जाती है (ख) शाखा तक आसानी से पहुँचा नहीं जा सकता

(ग) शाखाएँ बहुत भारी होती हैं (घ) विकसित पेड़ की शाखा मुड़ नहीं पाती

3. छात्रों को गुरुकुल में क्यों छोड़ा जाता था?

(क) उनमें सुसंस्कार और सद्वृत्तियाँ पोषित हों (ख) कठोर अनुशासन का पालन करना सीखें

(ग) विद्यार्थी जीवन का महत्त्व स्वीकार हो (घ) घर में संस्कार देना संभव नहीं

4. छात्रावस्था सफ़ेद चादर के समान है, क्योंकि

(क) जैसा प्रभाव डालना हो, डाला जा सकता है (ख) एक बार प्रभाव पड़ने पर बदला नहीं जा सकता

(ग) जितना प्रभाव डालना हो, डाला जा सकता है (घ) छात्रों में विरोध की भावना नहीं पनपती

5. 'विकसित' विशेषण बना है:

(क) सर्वनाम से (ख) संज्ञा से

(ग) क्रिया से (घ) अव्यय से